चार

गृह कलीसियाएं
House Churches

पहली बार गृह कलीसियाओं के बारे में सुनने पर लोग गृह कलीसियाओं और संस्थागत कलीसियाओं के बीच एकमात्र भिन्नता उनके आकार और अपनी संबन्धित 'सेवकाई' की देने वाली योग्यता में देखते हैं। कई बार लोग यह परिणाम निकालते हैं कि गृह कलीसियाएं इमारती कलीसियाओं के समान सेवकाई की गुणवत्ता को नहीं दे सकतीं। लेकिन 'सेवकाई' की परिभाषा देने पर यह कहा जाता है वह जो शिष्य-निर्माण में योगदान देते, उनकी मसीह के समान बनने में सहायता करते और उन्हें सेवा के लिए तैयार करते हैं, संस्थागत कलीसियाओं में ऐसी कोई सुविधा नहीं होती जैसा मैंने पिछले अध्याय में भी बताया था कि उनमें असुविधा तो हो सकती है। निश्चय ही गृह कलीसियाएं संस्थागत कलीसियाओं के समान विविध *गतिविधियां* नहीं कर सकती हैं, लेकिन वे एक *सत्य* सेवकाई को उपलब्ध करा सकती हैं।

कुछ लोग गृह कलीसियाओं को सच्ची कलीसियाएं होने के रूप में अस्वीकृत करते हैं, जिसका कारण उनके पास इमारत का न होना है। यदि इस तरह के लोग कलीसिया के पहले तीन सौ वर्षों में रहे होते, तो वे संसार की प्रत्येक कलीसिया को सच्ची कलीसिया मानने से इंकार कर देते। सच्चाई यह है कि यीशु ने घोषित किया, ''क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच मैं होता हूं'' (मत्ती 18:20)। यीशु ने इस बारे में कुछ नहीं कहा कि विश्वासियों को *कहां* एकत्रित होना चाहिए। और दो विश्वासियों के भी एकत्रित होने पर यदि वे उसके नाम में एकत्रित हों तो उसने उनके बीच उपस्थित होने की प्रतिज्ञा की है। मसीह के शिष्य भोजनालय में एक दूसरे के साथ खाना खाते समय, सत्य को बांटते हुए, एक दूसरे को शिक्षा व चेतावनी देते हुए जो कुछ कर रहे होते हैं वह कलीसिया के एकत्रित होने के नये नियम के आदर्श के अनुकूल है; उस सबसे विपरीत जो रविवार की प्रातः बहुत सी कलीसियाओं में होता है।

पिछले अध्याय में, मैंने उन कुछ लाभों की गिनती की है जो गृह कलीसियाओं में संस्थागत कलीसियाओं की तुलना में अधिक होती हैं। इस अध्याय का आरम्भ मैं कुछ और कारणों की गणना करने के द्वारा करना चाहूंगा कि गृह कलीसिया का नमूना एक उपयुक्त बाइबल-विकल्प क्यों है जो शिष्य निर्माण लक्ष्य को पूरा करने में अधिक प्रभावी हो सकता है। सर्वप्रथम, तथापि, मैं यह कहना चाहता हूं कि मेरा उद्देश्य संस्थागत कलीसियाओं या उनके पास्टरों पर प्रहार करने का नहीं है। संस्थागत कलीसियाओं में ऐसे बहुत से धर्मी और ईमानदार पास्टर हैं जो अपनी संरचना में प्रभु को प्रसन्न करने के लिए जो कुछ कर सकते हैं कर रहे हैं। मैं प्रति वर्ष हज़ारों संस्थागत कलीसियाओं में पास्टर के रूप में सेवा करता हूं, और मैं उनसे बहुत अधिक प्रेम करने के साथ साथ उनकी सराहना करता हूं। वे संसार के सबसे अच्छे लोगों में से हैं। और उनके काम की अद्वितीय कठिनाई को देखकर मैं उन्हें एक विकल्प देना चाहता हूं जो उन्हें कम से कम परेशानियों में डालते हुए उन्हें उसी समय में प्रसन्न और प्रभावी भी रखेगा। गृह कलीसिया नमूना बाइबल आधारित होने के साथ-साथ स्वयं को प्रभावी रूप में शिष्य बनाने के योग्य करते हुए परमेश्वर के राज्य का विस्तार करता है। मुझे इस बारे में बहुत कम संदेह है कि बड़ी संख्या वाले संस्थागत पास्टर एक गृह कलीसिया की स्थापना में कार्य करने पर अधिक प्रभावी, अधिक प्रसन्न और अधिक परिपूर्ण होंगे।

बीस वर्षों से भी अधिक समय तक मैं एक संस्थागत पास्टर रहा था और जो कुछ भी मैं जानता था मैंने उससे अपना सर्वोत्तम करने का प्रयास किया था। लेकिन कई महीनों तक रविवार की प्रात: कई कलीसियाओं में जाने पर मुझे इस बात की झलक मिली कि कलीसिया में जाना केवल एक 'अयाजक' व्यक्ति के समान होना है। यह आंख खोलने वाला था, और मैंने यह समझना आरम्भ कर दिया कि कलीसिया में जाने के लिए कुछ लोगों में उमंग क्यों नहीं होती है। पास्टर को छोड़ लगभग सभी के समान, मैं वहां बैठा हुआ सेवा के समाप्त होने की प्रतीक्षा करता रहता। ऐसा होने के पश्चात् ही मैं एक नीरस दर्शक के समान हर किसी से मिल सकता था। इस तरह के अनेक उत्प्रेरक अनुभवों के कारण मैंने एक श्रेष्ठ विकल्प पर विचार करना आरम्भ कर दिया और मैंने अपने अन्वेषण कार्य का आरम्भ गृह कलीसियाओं से किया। यह जानकर मुझे बहुत हैरानी हुई कि पूरे संसार भर में हज़ारों लाखों गृह कलीसियाएं पाई जाती हैं, और मैंने यह परिणाम निकाला की संस्थागत कलीसियाओं की तुलना में गृह कलीसियाएं लाभकारी हैं।

इस पुस्तक को पढ़ने वाले अधिकांश पास्टर गृह कलीसियाओं में कार्य नहीं कर रहे हैं, बल्कि संस्थागत कलीसियाओं में। मैं जानता हूं कि जो कुछ मैंने लिखा है उसमें से अधिकांश को यह ग्रहण करना उनके लिए कठिन होगा क्योंकि यह सबसे पहले बहुत अधिक उग्र प्रतीत होता है। लेकिन मैं चाहता हूं कि वे अपना कुछ समय इस पर ध्यान देने में बिताएं जो कुछ मुझे उनसे कहना है, और मैं उनसे इसके रात

भर ही में ग्रहण करने की अपेक्षा नहीं करता। यह मैंने पास्टरों और उनकी कलीसिया के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर उनके लिए लिखा है।

बाइबल में एक ही तरह की कलीसिया
The Only Kind of Church in the Bible

सर्वप्रथम, विशेष इमारतों में मिलने वाली संस्थागत कलीसियाओं के बारे में नये नियम में कुछ वर्णन नहीं मिलता, जबकि गृह कलीसियाएं आरम्भिक कलीसिया में सामान्य थीं:

> और यह सोचकर, वह उस यूहन्ना की माता मरियम के *घर* आया, जो मरकुस कहलाता है; वहां बहुत लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे (प्रेरित. 12:12 पर बल दिया गया है)।
>
> और जो जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने और *लोगों के सामने* (लेकिन कलीसियाई इमारतों में नहीं) और *घर-घर* सिखाने से कभी न झिझका (प्रेरित. 20:20, पर बल दिया गया है)।
>
> प्रिस्का और अक्विला को... *उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उनके घर में है* (रोमि. 16:3-5, पर बल दिया गया है; रोम में ऐसी अन्य संभावित गृह कलीसियाओं के विवरण हेतु रोमियों 16:14-15 भी देखें)।
>
> आसिया की कलीसिया की ओर से तुम को नमस्कार; अक्विला और प्रिसका का और *उनके घर की कलीसिया* का भी तुम को प्रभु में बहुत-बहुत नमस्कार (1कुरि. 16:19, पर बल दिया गया है)।
>
> लौदीकिया के भाइयों को और नुमफास और *उनके घर की कलीसिया* को नमस्कार कहना (कुलु. 4:15, पर बल दिया गया है)।
>
> और बहन अफफिया, और हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस और फिलेमोन के *घर की कलीयिा* के नाम (फिले. 1:2, पर बल दिया गया है)।

यह तर्क दिया जाता रहा है कि आरम्भिक कलीसिया द्वारा कलीसियाई इमारतों का निर्माण न किये जाने का एकमात्र कारण कलीसिया का शिशु अवस्था में होना था। लेकिन वह शैशवास्था नये नियम के इतिहास में वर्णित कुछ दशकों तक ही रही थी (और इसके बाद की दो शताब्दियों तक), अत: यदि कलीसियाई इमारत का निर्माण कलीसिया की परिपक्वता का एक चिन्ह है, तो प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमने प्रेरितों की जिस कलीसिया के बारे में पढ़ा वह परिपक्व नहीं थी।

मेरे अनुसार प्रेरितों द्वारा कलीसियाई इमारतों के न बनाए जाने का कारण यही रहा होगा कि उन्होंने इसे परमेश्वर की इच्छा में नहीं माना होगा क्योंकि यीशु ने इस तरह का कोई उदाहरण और निर्देश नहीं दिया था। उसने *विशिष्ट इमारतों के बिना* शिष्यों को बनाया था, और उसने अपने शिष्यों को शिष्य बनाने के लिए कहा था। उन्हें विशेष इमारतों की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई होगी। जब यीशु ने अपने शिष्यों को सारे संसार में जाकर शिष्य बनाने को भेजा, तब उसके शिष्यों ने यह विचार नहीं किया, ''यीशु हमसे इमारतों का निर्माण कर वहां सप्ताह में एक बार लोगों को संदेश देने के लिए कहना चाहता है।''

इसके अतिरिक्त, विशेष इमारतों का निर्माण मसीह की इस आज्ञा का प्रत्यक्ष रूप से उल्लंघन करना भी हो सकता है कि पृथ्वी पर धन जमा न करो, उस किसी चीज़ पर धन बर्बाद करते हुए जिसकी कोई आवश्यकता नहीं, इस तरह से परमेश्वर के राज्य के उन स्रोतों को छीनते हुए जिनका प्रयोग रूपान्तरण सेवकाई में किया जा सकता है।

बाइबल का भण्डारीपन

Biblical Stewardship

यह हमें इस दूसरी उपलब्धि की ओर लेकर जाता है जो गृह कलीसियाओं के पास संस्थागत कलीसियाओं से ऊपर है: गृह कलीसिया नमूना अपने सदस्यों के स्रोतों के लिए ईश्वरीय भण्डारीपन को बढ़ावा देता है, जो निश्चय ही शिष्यता का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है।[14] कलीसियाई इमारतों, स्वामित्व, किराए, मरम्मत, विस्तार, फिर से नये रूप से धन की बर्बादी होती है। अत: इमारतों पर किये जाने वाले धन की बर्बादी का प्रयोग गरीबों को भोजन और वस्त्र देने, सुसमाचार को फैलाने और शिष्य बनाने में किया जा सकता है, *जैसा प्रेरितों के काम की पुस्तक में किया गया था।* उन भलाईयों पर विचार करें जिनका प्रयोग परमेश्वर के राज्य के लिए किया जा सकता है यदि कलीसियाई इमारतों पर खर्च किये जानेवाले करोड़ों रुपयों का प्रयोग सुसमाचार को फैलाने और दरिद्रों की सेवा करने में किया जाए। यह अकल्पनीय है।

इसके अतिरिक्त, वे गृह कलीसियाएं जो बीस लोगों से अधिक से मिलकर नहीं बनी होतीं उनमें पास्टरों/प्राचीनों/ निरीक्षकों द्वारा ''तम्बू बनाने'' (अर्थात् कीमत चुकाए बिना) से निरीक्षण कार्य किया जा सकता है, इसकी संभावना तब ही होगी जब गृह कलीसियाओं में परिक्व विश्वासियों की संख्या अधिक हो। इस तरह की कलीसियाओं को चलाने के लिए अधिक धन की आवश्यकता नहीं होती।

---

14. www.shepherdserve.org के होम पेज पर *बाइबल संबंधी विषयों* के अन्तर्गत ''धन पर यीशु'' को देखें।

निस्संदेह, बाइबल यह संकेत देती हुए प्रतीत होती है कि प्राचीनों/पास्टरों/निरीक्षकों को उनके श्रम के अनुसार पारिश्रमिक दिया जाना *चाहिए,* ताकि वे जो अपना संपूर्ण समय सेवकाई में देते हैं, इससे अपनी पूर्ण जीविका को भी प्राप्त कर सकें (देखें 1 तीमु. 5:17-18)। गृह कलीसिया में पारिश्रमिक प्राप्त करने वाले दस लोगों का दशवांश एक पास्टर को सहारा दे सकता है जिससे वह अपने जीवन को सही तरह से बिता सके। गृह कलीसिया में पांच दशवांश देने वाले पास्टर को अपनी सेवकाई के आधे कार्य-सप्ताह के प्रति समर्पित होने से स्वतंत्र कर सकते हैं।

गृह कलीसिया नमूने पर चलते हुए, इमारतों पर खर्च किये जानेवाले धन का प्रयोग पास्टरों को सहारा देने के लिए किया जा सकेगा, इसलिए संस्थागत पास्टरों को यह नहीं सोचना चाहिए कि इस तरह की गृह कलीसियाओं से उनके कार्य को किसी तरह का खतरा होगा। इसके विपरीत इसका अर्थ यह हो सकता है कि अन्य पुरुष और स्त्रियां अपने मन में परमेश्वर द्वारा व्यावसायिक सेवकाई को डाले जाने की इच्छा को अनुभव करें।[15] यह बदले में, शिष्य निर्माण के लक्ष्य को पूरा करने में सहायक होगा। इसके अतिरिक्त बीस पारिश्रमिक प्राप्त करने वाले एक गृह कलीसिया में अपनी आधी आय मिशन-आऊटरीच और दरिद्रों के लिए दे सकते हैं।[16]

यदि एक संस्थागत कलीसिया का गृह कलीसियाओं के रूप में परिवर्तन हो जाता है, तब कलीसिया के प्रबन्धक, कार्यक्रम, कर्मचारी और कुछ विशेष सेवकाइयों के कर्मचारी सदस्य (उदाहरण के लिए, बड़ी कलीसियाओं में बाल और युवा सेवकाई) अपनी आय अर्जित करने वाली नौकरियों से हाथ धो बैठेंगे, संभवत: वे ऐसी सेवकाइयों के साथ काम करना न चाहें जो बहुत कम बाइबल आधारित होती हैं। गृह कलीसियाओं में बाल और युवा सेवकाई की कोई ज़रूरत नहीं होती क्योंकि बाइबल के अनुसार यह उत्तरदायित्व माता-पिता को सौंपा गया है, और गृह कलीसिया के लोग सांस्कृतिक मसीहियत के मानदण्डों को पूरा करने की तुलना में सामान्यता बाइबल के अनुसार चलना चाहते हैं। वे मसीही युवा जिनके माता-पिता मसीही नहीं हैं, उन्हें गृह कलीसियाओं में सम्मिलित कर उसी

15. यद्यपि यह उग्र प्रतीत हो सकता है, तथापि कलीसियाई इमारतों के होने का एकमात्र कारण उन अगुवों की कमी है जो लुघ गृह कलीसियाओं में निरीक्षण का कार्य कर सकते हैं जिसके परिणाम स्वरूप संस्थागत कलीसियाओं में प्रभावशाली अगुवों के होते हुए भी अच्छी शिष्यता नहीं हो पाती। क्या इसका अर्थ यह है कि विशाल संस्थागत कलीसियाओं के पास्टर ही वास्तव में अपनी मण्डली के परमेश्वर द्वारा बुलाए गए पास्टरों को उनकी अधिकारपूर्ण सेवकाइयों से वंचित करने के दोषी हैं।

16. एक से दस या बीस के प्रतिशत को पास्तरीय हत्या के रूप में नहीं सोचना चाहिए, यीशु के बारह पुरुषों को शिष्य बनाने तथा मूसा के दस लोगों पर न्यायियों को ठहराए जाने के बाइबल संबन्धी नमूने की रोशनी में (देखें निर्ग. 18:25)। अधिकांश संस्थागत पास्टर इतने अधिक लोगों का निरीक्षण कार्य करते हैं उसकी तुलना में जिन्हें वे प्रभावी रूप से स्वयं शिष्य बना सकते हैं।

तरह से शिष्य बनाया जा सकता है जैसे उन्हें संस्थागत कलीसियाओं में सम्मिलित किया जाता है। क्या किसी को आश्चर्य होता है कि नये नियम में 'युवा पास्टरों' या 'बच्चों के पास्टर' के बारे में क्यों नहीं बताया गया है? प्रथम 1900 वर्षों की मसीहियत में इस तरह की सेवकाइयां नहीं होती थीं। अचानक ही वे अब इतनी ज़रूरी क्यों हो गईं हैं, और विशेष रूप से धनी पश्चिमी देशों में?[17]

अन्त में, विशिष्ट रूप से दरिद्र देशों में, पास्टर अक्सर पश्चिमी मसीहियों से सहायता पाए बिना कलीसियाई इमारतों को बनाना व उन्हें किराए पर लेना असंभव पाते हैं। इस निर्भरता के अनेच्छिक परिणाम बहुतरफा हैं। तथापि, सच्चाई यह है कि 300 वर्षों तक मसीहियत में इस तरह की कोई समस्या नहीं थी। यदि आप एक विकास-शील राष्ट्र के पास्टर हैं जिसकी कलीसिया अपनी स्वयं की कलीसियाई इमारत का खर्च वहन नहीं कर सकती, तो आपको इस आशा से अपने यहां आनेवाले अमरीकियों की खुशामद करने की कोई ज़रूरत नहीं है कि उनसे आपको सोना मिल सके। परमेश्वर ने आपकी समस्या का समाधान पहले से ही कर दिया है। आपको सफलतापूर्वक शिष्य बनाने के लिए कलीसियाई इमारतों की आवश्यकता नहीं है। बाइबल के नमूने के अनुसार चलें।

खण्डित परिवारों का समापन
The End of Fragmented Families

गृह कलीसियाओं का दूसरा लाभ यह है; वे बच्चों और किशोरों को शिष्य बनाने तक पहुंचती हैं। संस्थागत कलीसियाओं ने आज जिस बड़े झूठ को सबके मनों में बैठा दिया है वह यह है कि वे बच्चों और युवाओं के लिए अद्‌भुत सेवकाई देते हैं। तौभी, वे इस सच्चाई को छिपाकर रखते हैं कि वे बच्चे जिन्होंने कलीसिया आने पर बाल व युवा सेवकाई का आनन्द उठाया था ''घोंसले को छोड़ देने'' के पश्चात् वे कलीसिया की ओर नहीं लौटते। (आंकड़ों के लिए युवा पास्टर से पता करें। वह इस बारे में जानता होगा)।

इसके अलावा, जिन कलीसियाओं में बाल व युवा सेवकाई पाई जाती है वे माता-पिता तक लगातार इस झूठ को पहुंचाते रहते हैं कि वे अपने बच्चों के आत्मिक प्रशिक्षण के लिए न तो योग्य हैं और न ही उत्तरदायी। वे कहते हैं, ''आपके बच्चे के आत्मिक प्रशिक्षण की देख-रेख हम करेंगे। हम प्रशिक्षित पेशेवर हैं।''

इस तरह की प्रणाली असफलता को जन्म देती है, क्योंकि यह एक समझौतेवादी

17. हम यह प्रश्न कर सकते हैं कि पवित्रशास्त्र में ''वरिष्ठ पास्टरों'', ''सहयोगी पास्टरों'' या ''सह पास्टरों'' का वर्णन क्यों नहीं मिलता है। पुन:, आधुनिक कलीसिया में इतने आवश्यक दिखनेवाले थे पद अपनी बनावट के कारण आरम्भिक कलीसिया में अनावश्यक थे। बीस लोगों की गृह कलीसियाओं में वरिष्ठ, सह, या सहयोगी पास्टरों की ज़रूरत नहीं होती।

चक्र की रचना करती है। इसका आरम्भ उन माता-पिताओं के साथ होता है जो अपने बच्चों के मज़ा लेने हेतु कलीसिया की तलाश में होते हैं। यदि युवा जौनी घर आकर माता-पिता से कहे कि उसे कलीसिया में मज़ा आया तो उसके माता-पिता यह सुनकर रोमांचित हो जाते हैं, क्योंकि वे जौनी के कलीसिया में आनन्द लेने से यह अनुमान लगाते हैं कि जौनी की रुचि आत्मिक चीज़ों में है। वे प्राय: गलत होते हैं।

सफलता-अभिलाषी पास्टर अपनी कलीसिया को बढ़ाना चाहते हैं, और इसी कारण युवा व बाल पास्टर बच्चों से 'संबंधित' कार्यक्रमों को बनाने के दबाव के कारण कर्मचारी सभा में भाग नहीं ले पाते। ('संबंधित' का संबंध प्रात: 'मज़े' से होता है, और 'संबन्धित' का आवश्यक रूप से यह अर्थ नहीं निकलता है 'बच्चों का पश्चात्ताप, विश्वास और यीशु की आज्ञाओं का पालन करने की ओर नेतृत्व करना।) यदि बाल कार्यक्रम को बेचा जा सके तो भोले भाले माता-पिता (अपने धन के साथ) लौट कर आएंगे, और कलीसिया विकास करेगी।

युवा समूहों की सफलता को विशिष्ट रूप में उपस्थिति संख्या के आधार पर मापा जाता है। युवा पास्टर प्राय: सही आत्मिकता के साथ समझौता करते हैं। उस बेचारे युवा पास्टर पर दया आती है जो यह सुनता है कि माता-पिता वरिष्ठ पास्टर पर इस कारण बुड़बुड़ा रहे हैं क्योंकि उनके बच्चे नीरस या दण्डित करने वाले संदेशों की शिकायत कर रहे हैं।

लेकिन मसीह की देह में युवा पास्टरों के लिए कितनी आशीष हो सकती है यदि वे गृह कलीसियाओं के अगुवे बन जाएं। उनमें सामान्यता पहले से ही महान संबंधात्मक प्रतिभा होने के साथ-साथ युवा उत्साह पाया जाता है तथा शक्ति की कमी नहीं होती। उनमें से अधिकांश केवल युवा पास्टर ही हैं क्योंकि वरिष्ठ पास्टर बनने के लिए यही उनका पहला कदम है। अधिकांश गृह कलीसियाओं की चरवाही करने में समर्थ होते हैं। जो कुछ वे अपने युवा समूहों में कर रहे होते हैं वह कलीसिया के बाइबल संबंधी नमूने की अधिक घनिष्ठता में हो सकता है उसकी तुलना में जो कलीसिया में प्रमुख स्थान में हो रहा होता है। ऐसा ही बच्चों के पास्टरों के लिये भी कहा जा सकता है जो अति वरिष्ठ पास्टरों से मीलों आगे हो सकते हैं कि उन गृह कलीसियाओं में सेवा का कार्य करें जिनमें बच्चों के साथ-साथ हर कोई एक छोटे घेरे में बैठता है, जिसमें सभी भाग लेने के साथ-साथ एक दूसरे के साथ भोजन बांटने का मज़ा ले रहे होते हैं।

बच्चों और किशोरों को *स्वाभाविक* रूप में गृह कलीसिया में श्रेष्ठ शिष्य बनाया जाता है, क्योंकि सच्चे मसीही के पास समुदाय का अनुभव करने के साथ-साथ भाग लेने, प्रश्न पूछने, सभी आयु के लोगों से संबंधित होने के अवसर होते हैं जो मसीही परिवार का एक भाग है। संस्थागत कलीसियाओं में वे लगातार एक बड़े कार्यक्रम को दिखाते और 'मज़े' के बारे में सीखते हैं, बहुत ही कम सच्चे समुदाय का अनुभव

ले पाते हैं वे व्यापक पाखण्ड को भी नहीं जान पाते, और स्कूल के समान ही अपने समकक्ष व्यक्ति से संबंधित होना सीखते हैं।

लेकिन सभी तरह की आयु वालों के बीच में उन बच्चों के बारे में क्या किया जाए जो रोते हैं या वे बच्चे जो अशान्त हो जाते हैं?

जब कभी वे समस्या उत्पन्न करें तो उन्हें संभालने के लिए कुछ ऐसे व्यवहारिक कदम उठाने चाहिए जिसमें वे आनन्द ले सकें। उदाहरणस्वरूप, उन्हें मनोरंजन लेने के लिए दूसरे कमरे में लेकर जाया जा सकता है, या फिर उन्हें रंग या पेपर देकर रंग करने को कहा जा सकता है। एक गृह कलीसिया के समुदाय में शिशुओं और बच्चों से कोई परेशानी नहीं होती। उनके बड़े परिवार में हर कोई उनसे प्रेम करता है। एक संस्थागत कलीसिया में एक शिशु के रोने पर प्रायः सर्विस की औपचारिकता में बाधा उत्पन्न हो जाती है और माता-पिता लोगों द्वारा घूरे जाने पर शर्मिन्दगी का अनुभव करते हैं। एक गृह कलीसिया में शिशु के रोने पर उसे उसके परिवार के द्वारा चारों ओर से घेर लिया जाता है और किसी को भी इस बात को स्मरण रखने में बुरा नहीं लगता कि परमेश्वर का एक उपहार उनके बीच में है, वे सभी उसको अपनी बांहों में थाम लेते हैं।

वे माता-पिता जिनके बच्चे अनियंत्रित हैं उन्हें अन्य माता-पिता उस बारे में सही-सही बता सकते हैं जिसे उन्हें जानने की ज़रूरत है। पुनः, विश्वासियों का एक उदार, देख-भाल करने का संबंध होता है। वे एक दूसरे के बारे में गपशप नहीं करते जैसा अक्सर संस्थागत कलीसिया में देखा जाता है। वे एक दूसरे को जानते व प्रेम करते हैं।

प्रसन्न पास्टर

Happy Pastors

दो दशकों तक चरावाही करने पर, पूरे संसार के हज़ारों पास्टरों से बात करने पर, और कई पास्टरों के व्यक्तिगत मित्र होने पर, मेरे विचार से मैं कह सकता हूं कि मैं आधुनिक कलीसिया में चरवाही करने की मांग के बारे में कुछ चीज़ जानता हूं। एक संस्थागत कलीसिया के प्रत्येक पास्टर के समान मैंने सेवकाई के ''अंधकारमय पक्ष'' का भी अनुभव किया है। कई बार यह *बहुत* ही अंधकारमय हो सकता है। वास्तव में, इसका वर्णन करने को ''निर्दयी'' शब्द सही होगा।

पास्टरों से की जानेवाली अपेक्षाओं का सामना उनमें एक अजीब से तनाव को उत्पन्न करता है जो कि कई बार उनके परिवार के साथ उनके संबन्ध को भी बिगाड़ देता है। पास्टर कई कारणों से निरुत्साहित हो जाते हैं। उन्हें राजनीतिज्ञ, न्यायकर्मी, मनोवैज्ञानिक, गतिविधि निर्देशक, इमारतों के ठेकेदार, विवाह परामर्शदाता, सार्वजनिक

वक्ता, प्रबन्धक, मनों को पढ़ने वाले तथा प्रशासनिक अधिकारी होना चाहिए। मसीह की देह के एक बड़े टुकड़े को प्राप्त करने के लिए वे स्वयं को कई बार दूसरे पास्टरों के साथ एक हिंसक प्रतियोगिता में पाते हैं। व्यक्तिगत आत्मिक अनुशासनों के लिए उनके पास बहुत कम समय होता है। कई लोग स्वयं को अपने पेशे में बंधा हुआ पाते हैं क्योंकि उन्हें इसका भुगतान किया जाता है। उनकी मण्डली, उनके ग्राहक और उनके कर्मी होते हैं। कई बार ये कर्मी और ग्राहक जीवन को बहुत कठिन बना सकते हैं।

तुलना करने पर गृह कलीसिया के पास्टर को इसमें क्षेत्र सुविधा होती है। सर्वप्रथम, यदि यह शिष्य के अनुकरणीय जीवन का नेतृत्व करने के साथ-साथ यीशु की आज्ञाओं को बिना कोई समझौता किये आज्ञाकारी रहने के बारे में सिखाता है, कुछ बकरियों की ही उसके समूह में रुचि होगी। वास्तव में केवल घरों में मिलना संभवत: कुछ बकरियों को दूर रखेगा। अत: उसके पास चरवाहे के रूप में कार्य करने को भेड़ें अधिक होंगी।

दूसरा, वह व्यक्तिगत आधार पर अपनी सभी भेड़ों से प्रेम कर सकता और उन्हें अनुशासित कर सकता है, क्योंकि उसके पास निरीक्षक के कार्य के लिए बारह से लेकर बीस व्यस्क होते हैं। वह उनके साथ घनिष्ठता का आनन्द ले सकता है, मानों वह परिवार का पिता हो। वह उन्हें उनकी आवश्यकतानुसार समय दे सकता है। मुझे स्मरण है कि जब मैं एक संस्थागत पास्टर था, मैं प्राय: अकेलेपन को अनुभव करता था। मैं अपनी मण्डली में से किसी के भी घनिष्ठ नहीं हो सका था। कुछ मुझसे उन्हें अपने निकट घेरे में शामिल न करने के कारण चिढ़ते थे या फिर जो मेरे निकटतम घेरे में थे, वे उनसे ईर्ष्या करते थे। मैं अन्य विश्वासियों के साथ सही घनिष्ठता रखना चाहता था, लेकिन सच्चे मित्रों को पाने के लिए संभावित मूल्य को चुकाने का जोखिम नहीं लेना चाहता था।

गृह कलीसिया के एक घनिष्ठ बंधे परिवार में, सदस्य स्वाभाविक रूप से सहायता के लिये पास्टर को उत्तरदायी मानते हैं, मानो वह उनका घनिष्ठ मित्र हो, न कि मंच का एक नायक।

गृह कलीसिया का पास्टर गृह कलीसिया के भावी अगुवों को विकसित करने में समय बिता सकता है, इसलिए जब गुणन करने का समय आता है, तो अगुवे तैयार होते हैं। वह अपने प्रतिज्ञात् भावी अगुवों को अपने वरदानों को कलीसिया से लेकर अन्य स्थान में बाइबल स्कूल तक ले जाने को नहीं देखता।

उसके पास अपनी स्थानीय मण्डली के बाहर अन्य सेवकाई को विकसित करने

का सही समय हो सकता है। संभव है कि वह जेल, व्यक्तिगत देख-रेख निवास में सेवा करे या शरणार्थियों या व्यवसायी लोगों तक एक एक करके प्रचार करने में जुड़ा हो। अपने अनुभव पर निर्भर रहते हुए, वह अन्य गृह कलीसियाओं को रोपित करने में अपना कुछ समय दे सकता है या फिर गृह कलीसिया के उन युवा पास्टरों को शिक्षण दे सकता है जिनका पोषण उसकी सेवकाई के अंतर्गत हुआ है।

रविवार प्रात: के प्रदर्शनकर्त्ता के रूप में उस पर कोई दबाव नहीं होता। उसे शनिवार रात्रि को कभी भी संदेश को तैयार करने की आवश्यकता नहीं होती, कि वह विभिन्न आत्मिक स्तर के लोगों को किस तरह से संतुष्ट कर सकता है।[18] वह समूह में प्रत्येक के पवित्रात्मा द्वारा प्रयोग किये जाने पर खुश हो सकता है और वह उन्हें उनके वरदानों का प्रयोग करने को प्रोत्साहित करता है। वह सभाओं से अनुपस्थित हो सकता है और हर चीज़ उसके बिना भी अच्छी तरह से कार्य करती है।

दूसरी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये उसके पास कोई इमारत नहीं होती और न ही प्रबन्ध करने के लिये कर्मी।

अन्य स्थानीय पास्टरों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने का उसके पास कोई कारण नहीं होता।

वहां कोई 'कलीसियाई-मण्डल' नहीं होता जो कि उसके जीवन को दयनीय बना दे और जिसके द्वारा राजनीति संघर्ष सामान्य हो जाता है।

संक्षेप में, वह ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसके लिये परमेश्वर ने उसे बुलाया था, न कि वह जिसे उस पर सांस्कृतिक मसीहियत द्वारा थोपा गया हो। वह एक नेतृत्व करने वाला नायक, कंपनी का अध्यक्ष या नाभि का केन्द्र नहीं है। वह एक शिष्य निर्माता है, धर्मी जनों को तैयार करने वाला।

---

18. अधिकांश पास्टर, परमेश्वर द्वारा बुलाए जाने पर भी अच्छे वक्ता व मसीह के देख- रेख करने वाले सेवक कभी नहीं बन पाते हैं। वास्तव में, यह कहना बहुत कठोर हो सकता है कि पास्टरों द्वारा दिये जाने वाले अधिकांश संदेश या तो हमेशा नीरस होते हैं या फिर कई अवसरों पर कम नीरस होते है। एक कलीसिया आलोचक का उल्लेख हज़ार मील तक टकटकी लगाने वाले'' के रूप में किया जाता है जो मंच पर बैठने वालों में बहुत ही सामान्य होता है। लेकिन वही पास्टर जो कि नीरस वक्ता होते हैं वे सामान्यता बहुत ही अच्छी बातचीत करनेवाले होते हैं, और जब वे एक दूसरे के साथ बातचीत में लगे होते हैं तब लोग बहुत कम ही ऊबते हैं। इसी कारण गृह कलीसियाओं में होने वाली पारस्परिक शिक्षा सामान्यता सदैव रोचक हुआ करती हैं। ऐसे समयों में समय का पता नहीं चलता, उनकी तुलना में जब कलीसियाई संदेशों के समय में बहुत से छिप-छिपकर अपने हाथ में बंधी घंड़ी की ओर देखते हैं। गृह कलीसियाओं के पास्टरों को ऊब नीरस का कोई भय नहीं होता।

प्रसन्न भेड़ें
Happy Sheep

बाइबल आधारित गृह कलीसियाएं वे हैं जिनकी इच्छा और आनन्द लेना प्रत्येक सच्चा विश्वासी चाहता है।

सभी सच्चे विश्वासी अन्य विश्वासियों के साथ एक सही संबन्ध रखना चाहते हैं क्योंकि परमेश्वर के प्रेम को उनके हृदयों में डाला गया है। इस तरह के संबंध गृह कलीसियाओं के भाग या पार्सल हैं। यह वही है जिसे बाइबल *सहभागिता* करना कहती है, एक व्यक्ति द्वारा अन्य भाई बहनों को अपने जीवन के बारे में बताना। गृह कलीसियाएं एक ऐसे वातावरण की रचना करती हैं जहां विश्वासी वह कर सकते हैं जिसे करने की अपेक्षा उनसे की जाती है, जो नये नियम के ''एक दूसरे'' परिच्छेदों में पाया जाता है। गृह कलीसियाओं में, विश्वासी प्रेरित होना, प्रोत्साहित करना, उन्नत होने, सांत्वना पाने, सिखाने, सेवा करने के साथ-साथ एक दूसरे के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। वे एक दूसरे को प्रेम और भले कार्यों को करने, एक दूसरे के सामने अपने पापों का अंगीकर करने, एक दूसरे का बोझ उठाने और एक दूसरे को भजन, गीतों और आत्मिक गीतों के द्वारा चेतावनी देते हुए उत्तेजित कर सकते हैं। जो रोते हैं वे उनके साथ रो सकते हैं और जो खुश होते हैं वे उनके साथ खुश हो सकते हैं। इस तरह की चीज़ें संस्थागत कलीसियाओं में रविवार प्रातः को नहीं होतीं, जहां विश्वासी केवल बैठे हुए देखते हैं। गृह कलीसिया के एक सदस्य ने मुझे बताया, ''जब हमारी देह में कोई बीमार हो जाता है, तो मैं भोजन को लेकर किसी अजनबी के घर नहीं जाता क्योंकि मुझे 'भोजन सेवकाई' के लिए नियुक्त किया गया है। स्वाभाविक रूप से मैं भोजन को उस किसी के पास लेकर जाता हूं जिसे मैं जानता और प्रेम करता हूं।''

सच्चे विश्वासियों को एक दूसरे से मिलने से खुशी होती है। निष्क्रिय रूप से बैठे हुए असंबद्ध और व्यर्थ के संदेशों को प्रति वर्ष सुनना उनकी बुद्धि और आत्मिकता का अपमान है। इसके विपरीत उन्हें परमेश्वर और उसके वचन से मिलने वाली व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि के बारे में बताना चाहिए और गृह कलीसियाएं ये अवसर उपलब्ध कराती हैं। सांस्कृतिक की तुलना में एक बाइबल आधारित नमूने के अनुसार चलने पर प्रत्येक व्यक्ति ''के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है'' (1 कुरि. 14:26)। गृह कलीसियाओं में कोई भी भीड़ में खोता नहीं है या एक कलीसियाई गुट के द्वारा निकाला नहीं जाता है।

सच्चे विश्वासी सर्विस में परमेश्वर द्वारा प्रयोग किये जाने की इच्छा करते हैं। एक गृह कलीसिया में, प्रत्येक के पास दूसरों को आशीष देने हेतु प्रयोग किये जाने का अवसर होता है और उसी के साथ साथ उत्तरदायित्वों को सभी के साथ

बांटने का भी अवसर होता है जिससे किसी को भी उस ईर्ष्या का अनुभव न हो जो संस्थागत कलीसियाओं के समर्पित सदस्यों को होती है। कम से कम, हर कोई मिलकर खाने के लिए भोजन को ला सकता है, जिसका उल्लेख पवित्रशास्त्र में 'प्रेम संस्थाओं' के रूप में मिलता है (यहूदा 1:12)। अधिकांश गृह कलीसिया में, वह भोजन प्रभु-भोज के मूल उदाहरण के अनुसार है, जो वास्तविक फसह भोज का एक भाग था। प्रभु भोज वह नहीं है जिसके बारे में एक छोटे लड़के ने मेरी पिछली संस्थागत कलीसिया में बताया जिसमें मैं पास्टर था, ''परमेश्वर का पवित्र नाश्ता।'' कलीसियाई सर्विस के समय में कुछ सैकेण्ड के लिए एक छोटे से टुकड़े को कुछ अजनबियों के बीच खाना व थोड़े से जूस को पीना बाइबल के लिए बिल्कुल अनजाना है और बाइबल आधारित गृह कलीसियाओं के लिए भी। शिष्यों द्वारा एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक खाए जाने वाले भोजन को पवित्र विधि के रूप में लिया गया है।

एक गृह कलीसिया में आराधना सरल, निष्कपट और हिस्सेदारी वाली होती है न कि प्रदर्शन वाली। सच्चे विश्वासियों को आत्मा और सत्य में होकर परमेश्वर की आराधना करना अच्छा लगता है।

सैद्धान्तिक संतुलन और उदारता
Doctrinal Balance and Toleration

छोटे कलीसियाई समूहों की सामान्य और खुले रूपों में दी जाने वाली शिक्षा को उस व्यक्ति के द्वारा जांचा जा सकता है जो पढ़ सकता है। वे भाई बहन जो एक दूसरे को जानते व प्रेम करते हैं वे अपने भिन्न दृष्टिकोणों के बावजूद एक दूसरे से जुड़े रहते हैं और यदि समूह सामंजस्य, प्रेम और सिद्धान्त तक नहीं पहुंच पाता, तौभी वे एक दूसरे के साथ बंधे रहते हैं। समूह में किसी भी व्यक्ति द्वारा दी जाने वाली कोई भी शिक्षा, जिसमें प्राचीन/ पास्टर/निरीक्षक भी आते हैं, किसी के भी द्वारा प्रेमपूर्ण जांच किये जाने का विषय है, क्योंकि शिक्षक प्रत्येक सदस्य में वास करता है (देखें 1 यूहन्ना 2:27)। बाइबल आधारित नमूने के संतुलन इसे सैद्धान्तिक रूप से हटने में बचाने को सहायता करते हैं।

यह आधुनिक संस्थागत कलीसियाओं के मानदण्ड से विपरीत है, जहां कलीसियाई सिद्धांत को आरम्भ से ही स्थगित किया जाता है और इसे चुनौती भी नहीं दी जाती। परिणामस्वरूप, असीमित रूप से बुरे सिद्धांत आते हैं, और इसी कारण, एक संदेश में एकमात्र बिन्दु भी असहमति का परिणाम हो सकता है, जो जहाज़ पर अस्थायी रूप से बैठकर कुछ को ''अपने समान विश्वासी'' पाते हैं। वे जानते हैं कि अपनी सैद्धान्तिक असहमतियों के बारे में पास्टर को बताने का कोई फायदा नहीं है। चाहे वह अपने दृष्टिकोण को बदलना भी चाहता

हो, उसे इसे अपनी कलीसिया के अधिकांश लोगों के साथ-साथ अपने संप्रदाय के उच्च वर्ग के लोगों से भी छिपाकर रखना होगा। संस्थागत कलीसियाओं में पाई जाने वाली सैद्धान्तिक भिन्नताएं ऐसे पास्टरों का उत्पादन करती हैं जिनमें से कुछ संसार के प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञ तथा अस्पष्ट सामान्यताओं पर बोलने वाले वक्ता होते हैं तथा हर उस चीज़ से बचते हैं जिसका परिणाम विवाद हो सकता है, प्रत्येक का इस विचार को करने में नेतृत्व करते हुए कि वे उसके शिविर में हैं।

एक आधुनिक प्रवृत्ति
A Modern Trend

रोचक बात है कि अधिक से अधिक संस्थागत कलीसियाएं अपने संस्थागत नमूनों में होकर छोटे समूहों में विकसित हो रही हैं, शिष्यता में अपने मूल्य को पहचानते हुए। कुछ कलीसियाएं इससे भी आगे चली जाती हैं, छोटे समूहों पर अपनी केन्द्रीय बनावट को आधारित करते तथा उन्हें अपनी सेवकाई का सबसे महत्वपूर्ण पहलू मानते हुए। छोटे समूहों में विशाल ''समारोही सभाओं'' का द्वितीय स्थान होता है (कम से कम थियोरी में तो)।

ये सही दिशा में उठाए गए कदम हैं, और परमेश्वर इस तरह के कदमों को आशीष देता है, जैसे उसकी आशीष हम पर इतनी उपयुक्त मात्रा में है कि हम उसकी इच्छा में बने रहते हैं। निश्चय ही ''सेल कलीसियाएं'' शिष्य निर्माण का आरम्भ करने में संस्थागत कलीसियाओं की तुलना में श्रेष्ठ हैं। वे संस्थागत कलीसियाई नमूने और गृह कलीसिया नमूने के आधे मार्ग में आकर दोनों को आपस में जोड़ती हैं।

आधुनिक संस्थागत कलीसियाओं की छोटे समूहों के साथ प्राचीन और आधुनिक गृह कलीसियाओं से तुलना कैसे की जाती है? इसमें कुछ भिन्नताएं हैं।

उदाहरण के लिये, संस्थागत कलीसियाओं में पाये जाने वाले छोटे समूह दुर्भाग्यवश कई बार उन्नति के लिए कार्य करते हैं जो कि संस्थागत कलीसियाओं में होना गलत है, विशेषकर उस समय जब छोटे समूह की सेवकाई को आरम्भ करने का वास्तविक उद्देश्य वरिष्ठ पास्टर के कलीसियाई राज्य का निर्माण करना हो। वह अपने लिये लोगों का प्रयोग करता है और छोटे समूह इस योजना में सही बैठते हैं। ऐसा होने पर छोटे समूह के अगुवों का चयन मां कलीसिया के लिए उनकी जांची गई निष्ठा के आधार पर होता है, और वे बहुत अधिक प्रतिभाशाली या कैरिस्मेटिक नहीं हो सकते, जबकि शैतान उनके मनों को इन विचारों से भर देता है कि वे इसे अपने आप कर सकते हैं। इस तरह की नीति छोटे समूहों की प्रभावशीलता में बाधक है और दूसरी संस्थागत कलीसियाओं के समान वास्तव में बुलाए गए और प्रेरक अगुवों को बाइबल स्कूलों

और सेमिनरियों में भेजती है, कलीसिया से सच्चे वरदानों को लूटते हुए, और ऐसे लोगों को एक ऐसे स्थान पर ले जाते हुए जहां उन्हें शिष्य बनाने के कार्य की बजाय संदेश को सिखाया जाएगा।

संस्थागत कलीसियाओं में पाए जाने वाले छोटे समूह सहभागी समूहों की तुलना में प्राय: कुछ अधिक जुड़े रहते हैं। शिष्य निर्माण वास्तव में नहीं हो रहा होता। क्योंकि लोगों से रविवार प्रात: आत्मिक रूप से तृप्त होने की अपेक्षा की जाती है, छोटे समूह कई बार परमेश्वर के वचन से हटकर कहीं और ध्यान केन्द्रित करते हैं, रविवार प्रात: को दोबारा न दोहराते हुए।

संस्थागत कलीसियाओं में छोटे समूहों को अक्सर कलीसिया के कर्मचारी सदस्यों द्वारा स्थापित किया जाता है, बजाय इसके कि उनका आत्मा से जन्म हुआ हो। कलीसिया के अन्य कई कार्यक्रमों के समान वे भी एक कार्यक्रम बन जाते हैं। लोगों को आयु, सामाजिक स्तर, पृष्ठभूमि, रुचियों, वैवाहिक स्तर या भौगोलिक स्थान के आधार पर एक साथ रखा जाता है। बकरियां प्राय: भेड़ों के साथ मिल जाती हैं। कुल मिलाकर यह दैहिक संस्था विश्वासियों की उनकी भिन्नताओं के बावजूद एक दूसरे से प्रेम करने में कोई सहायता नहीं करती। स्मरण रखें कि अधिकांश आरम्भिक कलीसियाएं यहूदियों व अन्यजातियों का मिश्रण थीं। वे नियमित रूप से मिलकर भोजन खाते थे, कई बार यहूदी परम्परा के अन्तर्गत इसे छोड़ दिया जाता था। उनकी सभाओं में सीखने का कितना अच्छा अनुभव है। प्रेम में चलने के कितने अच्छे सुअवसर हैं! सुसमाचार की सामर्थ की कितनी अच्छी गवाहियां हैं। अत: छोटे समूहों की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए हम प्रत्येक को सदृश समूहों में विभाजित करने का विचार क्यों करें?

छोटे समूहों वाली संस्थागत कलीसियाओं में अभी भी रविवार प्रात: का प्रदर्शन होता है, जहां दर्शक नीरस प्रदर्शन को देखते हैं। छोटे समूहों को वास्तविक कलीसियाई सेवा के समय में मिलने की अनुमति नहीं दी जाती है, सभी की ओर यह संकेत करते हुए कि यह वास्तव में संस्थागत सर्विस है जो अधिक महत्वपूर्ण है। इस संदेश के कारण रविवार प्रात: आने वाले अधिकांश लोग प्रोत्साहित किये जाने पर छोटे समूहों में शामिल नहीं होते, क्योंकि वे उन्हें औपचारिक रूप से देखते हैं। वे इस बात से संतुष्ट रहते हैं, कि वे सबसे महत्वपूर्ण साप्ताहिक सर्विस में भाग ले रहे है। अत: छोटे समूहों के बारे में धारणा यह हो सकती है कि यह एक ऐसी चीज़ है जो महत्वपूर्ण है, लेकिन रविवार संस्थागत सर्विस के समान महत्वपूर्ण नहीं हैं। वास्तविक सहभागिता, शिष्यता और आत्मिक विकास का श्रेष्ठ सुअवसर हटा दिया गया है। गलत संदेश भेजा गया है। संस्थागत सेवा अभी भी राजा है।

अधिक भिन्नताएं
More Differences

छोटे समूहों के साथ संस्थागत कलीसियाओं को अभी भी एक सामूहिक पिरामिड के समान बनाया गया है, जहां हर कोई धर्माधिकारी वर्ग में अपने स्थान के बारे में जानता है। सर्वोच्च स्थान पर रहने वाले लोग स्वयं को 'सेवक अगुवे' कह सकते हैं, लेकिन वे सामान्यता प्रमुख अधिकारी होते हैं जो विशिष्ट नियमों को लेने के उत्तरदायी होते हैं। जितनी बड़ी कलीसिया होगी, पास्टर की अपने झुण्ड से दूरी भी उतनी ही होगी। यदि वह एक सच्चा पास्टर है और यदि आप उससे एक आरक्षित समय में सत्य को स्वीकार करा सकें, वह आपसे कहेगा कि एक झुण्ड की चरवाही करने में उसे खुशी होगी।

इसी तरह से छोटे समूहों के साथ संस्थागत कलीसियाएं अभी भी याजक वर्ग-अयाजक वर्ग के विभाजन को बढ़ावा देती हैं। छोटे समूह के अगुवे सदैव अधीनस्थ वर्ग में आते हैं। बाइबल अध्ययन के अध्याय प्रायः याजक वर्ग द्वारा अनुमोदित किये जाते हैं, क्योंकि छोटे समूह के अगुवों पर अधिक अधिकार के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता है। छोटे समूहों को प्रभु भोज या बपतिस्मे की विधि पर कार्य करने की अनुमति नहीं दी जाती। ये पवित्र कर्तव्य शीर्षक और डिप्लोमा सहित उच्च वर्ग के लिए आरक्षित हैं। जिन्हें देह में होकर परमेश्वर की सेवकाई के लिए बुलाया गया है उन्हें बाइबल स्कूल या सेमिनरी में जाकर 'वास्तविक' सेवकाई के योग्य होने को सर्वोच्च समूह से जुड़ना है।

संस्थागत कलीसियाओं के अन्तर्गत आने वाले छोटे समूह कई बार छोटी-कलीसियाई सेवा से अधिक नहीं होते हैं, 60 से 90 मिनट तक लम्बे नहीं होते, जहां एक दान प्राप्त व्यक्ति आराधना का नेतृत्व करता है और दूसरा दान प्राप्त व्यक्ति अनुमोदित शिक्षण देता है। आत्मा द्वारा दूसरों को प्रयोग किये जाने, वरदानों का वितरण करने पर सेवकों को विकसित करने का बहुत कम स्थान होता है।

संस्थागत कलीसियाओं के लोग सामान्यता छोटे समूहों के प्रति गंभीरतापूर्वक समर्पित नहीं होते हैं, वे कभी कभी ही उनमें जाते हैं, और समूहों को कई बार अस्थायी रूप में बनाया जाता है, और इसी कारण समुदाय की गहराई गृह कलीसियाओं से कम होती है।

संस्थागत कलीसियाओं में छोटे समूह साधारणतया सप्ताह में एक बार मिलते हैं जिससे दूसरी कलीसियाई सभाओं के साथ सप्ताहंत पर कोई भीड़ न हो। परिणामस्वरूप, सप्ताह के बीच में छोटे समूह का समय सामान्यता उनके लिए दो घण्टे से अधिक नहीं होता जो इसमें शामिल हो सकते हैं और यह उनके लिए वर्जित होता है जिनके स्कूल जाने वाले बच्चे होते हैं या जिन्हें अधिक दूरी वाले स्थान तक जाना होता है।

संस्थागत कलीसियाओं द्वारा छोटे समूहों को बढ़ावा दिये जाने पर भी इमारत पर धन गंवाया जाता है। वास्तव में, यदि छोटे समूह के कार्यक्रम लोगों को कलीसिया से जोड़ते हैं, तब भी इमारती कार्यक्रमों पर अधिक धन खर्च किया जाता है। इसके अतिरिक्त, संस्थागत कलीसियाओं में पाए जाने वाले संगठित छोटे समूहों में कम से कम एक भुगतान किये जाने वाले की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ दूसरे कलीसियाई कार्यक्रम के लिए और अधिक धन की आवश्यकता से है।

संभवत: इसमें सबसे बुरा यह है कि संस्थागत कलीसियाओं के पास्टर छोटे समूहों के साथ सामान्यता अपने व्यक्तिगत शिष्य निर्माण में सीमित होते हैं। वे अपने अत्यधिक उत्तरदायित्वों के साथ अत्यंत व्यस्त रहते हैं और एक के बाद एक शिष्यता के लिए उन्हें बहुत कम समय मिलता है। सबसे घनिष्ट रूप में वे छोटे समूह के अगुवों को शिष्य बना सकते हैं लेकिन यह भी माह में एक बार होने वाली सभा के रूप में सीमित होता है।

इस सब के बारे में मेरे विचार से यह कहा जाता है कि गृह कलीसियाएं- शिष्यों को बनाने और उनका गुणन करने और शिष्य बनाने वालों में अधिक बाइबल आधारित और प्रभावी हैं। तथापि, मैंने यह जाना है कि मेरा विचार कलीसिया की सैकड़ों वर्ष पुरानी परम्परा को बदलने नहीं जा रहा है। अत:, मैं संस्थागत कलीसियाओं के पास्टरों को अपनी कलीसियाओं को शिष्यता निर्माण के अधिक बाइबल आधारित नमूने की दिशा में गति करने हेतु कुछ करने को प्रेरित करता हूं।[19] उन्हें व्यक्तिगत रूप से भावी अगुवों के रूप में शिष्य बनाने या छोटे समूह सेवकाई का आरम्भ करने पर विचार किया जा सकता है। वे एक 'प्रात:कालीन कलीसियाई विचार' पर अपना अधिकार कर सकते हैं जब कलीसियाई इमारत बन्द हो और हर कोई घरों में भोजन को एक

19. उन्मादी शब्द की मेरी एक मनपसंद परिभाषा यह है: *एक ही चीज़ को बार-बार भिन्न-भिन्न परिणामों की आशा करते हुए* करना पास्टर वर्षों तक शिष्य निर्माण के उत्तरदायित्व में सम्मिलित होने की शिक्षा दे सकते हैं, लेकिन जब तक वे अपनी संरचना या तरीके में बदलाव न करें, लोग कलीसिया में केवल बैठने के लिए ही आते रहेंगे ताकि सुनकर घर जाएं। पास्टर, यदि आप उसे करते जा रहे हैं जिसने लोगों को अब तक नहीं बदला है, तो यह भविष्य में भी लोगों को नहीं बदलेगा। जो आप कर रहे हैं उसमें बदलाव करें।
20. मैं जानता हूं कि ऐसे लोग हैं जिन्होंने प्रथम शताब्दी की में आत्मा की सभी अलौकिक अभिव्यक्तियों को बहिष्कृत कर दिया है। इसलिए आरम्भिक कलीसिया ने जो अनुभव पाया था हमें उसके पीछे जाने की कोई आवश्यकता नहीं, और अन्य भाषा में बोलने की अब कोई वैधता नहीं। इस तरह के लोगों के प्रति मुझे कुछ सहानुभूति है जो आधुनिक दिनों के सदूकियों के समान हैं। उस एक व्यक्ति के समान जो जापानी वक्ता होने के कारण जापानी भाषा में परमेश्वर की स्तुति करता है, यद्यपि उसने पहले कभी जपानी भाषा को सीखा नहीं होता, मैं जानता हूं कि इन दानों का पवित्र आत्मा द्वारा दिया जाना नहीं रोका गया है। मुझे इस बात से भी आश्चर्य होता है कि ये आधुनिक सदूकी अभी भी पवित्र आत्मा द्वारा पापियों को बुलाने, अपराध स्वीकार कराने और पुनरुज्जीवित करने की आशा करते हैं, परन्तु आत्मा के कार्य से उत्पन्न चमत्कारों से इंकार करते हैं। इस तरह की थियोलोजी मानव अविश्वास और अनाज्ञाकारिता को उत्पादन करती है, जिसका कोई पवित्रशास्त्रीय समर्थन नहीं है, और वास्तव में मसीह के लक्ष्य के विरोध में कार्य करता है। पौलुस ने 1 कुरि. 14:37 में जो लिखा उसके अनुसार यह मसीह के प्रति प्रत्यक्ष अनाज्ञाकारिता है।

दूसरे के साथ बांटे और उसी तरह से मिलने का प्रयास करे जैसा प्रथम तीन शताब्दी के मसीहियों ने किया था।

जिन पास्टरों की कलीसियाओं में छोटे समूह पाए जाते हैं वे कुछ छोटे समूहों को गृह कलीसिया का निर्माण करने को और यह देखने को संयुक्त कर सकते हैं कि क्या होता है। यदि छोटे समूह मज़बूत हैं और उनका नेतृत्व परमेश्वर द्वारा बुलाए गए पास्टरों/प्राचीनों/निरीक्षकों द्वारा किया जाता है, तो उन्हें स्वयं संचालन करने के योग्य होना चाहिए। उन्हें अब मां कलीसिया की और अधिक आवश्यकता नहीं होती। उन्हें स्वतंत्र क्यों नहीं कर दिया जाता।[20] मुख्य कलीसिया तक जाने वाला सदस्यों का धन गृह कलीसिया के पास्टर को सहारा दे सकता है।

क्या गृह कलीसियाओं के लिए मेरी मंजूरी का अर्थ यह है कि संस्थागत कलीसियाओं के बारे में कहने को कुछ भी अच्छा नहीं है? ऐसा बिल्कुल नहीं है : डिग्री प्राप्त करने वाले शिष्य जो मसीह के आज्ञाकारी होते हैं उनका निर्माण संस्थागत कलीसियाओं में ही होता है, वे सराहनीय हैं। तथापि, उनकी रीति और बनावट कई बार हमारे लिए मसीह द्वारा ठहराए गए लक्ष्य में सहायक होने के बजाय बाधा उत्पन्न करती है, और वे पास्टरों की हत्या करने वाले होती है।

एक गृह कलीसिया समूह में क्या होता है?
What Happens at a House Church Gathering?

प्रत्येक गृह कलीसिया की एक समान बनावट किये जाने की आवश्यकता नहीं होती, इसमें बहुत से परिवर्तनों के लिए स्थान होता है। प्रत्येक गृह कलीसिया को स्वयं अपने सांस्कृतिक और सामाजिक अन्तर को प्रतिबिम्बित करना चाहिए–एक कारण कि गृह कलीसियाएं प्रचार कार्य में अधिक प्रभावी कैसे हो सकती हैं, विशेषकर उन देशों में जहां कोई मसीही सांस्कृतिक परम्परा न हो। गृह कलीसिया के सदस्य अपने पड़ोसियों को एक कलीसियाई इमारत में आमन्त्रित नहीं करते जो कि उनके लिए बिलकुल पराया है जहां उन्हें रीति-रिवाज़ों से जुड़ना होगा। वह स्थान उनके लिए बिलकुल पराया या विदेशी होता है-परिवर्तन में आने वाली प्रमुख बाधा। इसके विपरीत वे अपने पड़ोसियों को अपने मित्रों के साथ भोजन पर आमंत्रित करते हैं।

सामान्यता सामूहिक भोजन गृह कलीसियाओं की सभा का प्रमुख घटक माना जाता है। अधिकांश गृह कलीसियाओं में, उस भोजन को या प्रभु भोज को सम्मिलित किया जाता है, और प्रत्येक गृह कलीसिया व्यक्तिगत रूप से यह निर्धारित कर सकती है कि इसके आत्मिक महत्व को कितनी अच्छी तरह से बाहर लाया जा सकता है। जैसा कि पहले बताया गया है, *मूल* प्रभु भोज का आरम्भ एक फसह भोज से हुआ था जो अपने आत्मिक महत्व से बंधा हुआ है। एक भोजन या भोजन के एक भाग के

रूप में प्रभु भोज को मनाना उस नमूने के समानान्तर है जब आरम्भिक विश्वासी इकट्ठे होते थे। हमने आरम्भिक मसीहियों के बारे में पढ़ा :

> और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने में और *रोटी तोड़ने में* और प्रार्थना करने में लौलीन रहे और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, *और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे* (प्रेरित. 2:42, 46, पर बल दिया गया है)।

आरम्भिक मसीही रोटी के टुकड़े ले रहे थे, उन्हें तोड़ते हुए, एक दूसरे के साथ बांटते थे, एक ऐसी चीज़ जो उनकी संस्कृति में व्यवहारिक रूप से की जाती थी। क्या भोजन के समय में रोटी को तोड़ना आरम्भिक मसीहियों के लिए कुछ आत्मिक महत्व का कारण बन सका? बाइबल इस बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहती। तथापि, विलियम बार्कले अपनी पुस्तक *प्रभु भोज,* में लिखते हैं ''इसमें संदेह नहीं कि प्रभु भोज का आरम्भ एक पारिवारिक भोज या एक निजी घर में मित्रों के साथ भोज करने के रूप में हुआ...रोटी के एक छोटे टुकड़े और दाखमधु के एक घूंट का मूल प्रभु भोज के साथ किसी तरह का कोई संबंध नहीं है...प्रभु भोज मूल रूप से मित्रों के घर में होने वाला एक पारिवारिक भोज था।'' यह अद्‌भुत है कि प्रत्येक आधुनिक बाइबल विद्वान बार्कले के साथ सहमत है, तौभी कलीसिया अभी भी इस विषय पर परमेश्वर के वचन की अपेक्षा परम्पराओं के अनुसार चल रही है।

यीशु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि वे अपने शिष्यों को वे सब सिखाएं जिसकी आज्ञा उसने उन्हें दी थी, अत: जब उसने अपने स्मरण में उन्हें एक साथ मिलकर रोटी खाने और दाखमधु पीने की आज्ञा दी, तो उन्हें भी अपने शिष्यों को ऐसा ही करने की शिक्षा देनी होगी। क्या ऐसा सामान्य भोजन में हो सकता है? पौलुस द्वारा कुरिन्थियों को लिखे गए शब्दों से ऐसा ही प्रतीत होता है :

> सो तुम जो एक जगह में *इकट्ठे* होते हो (और वह कलीसियाई इमारत में इकट्ठे होने के बारे में नहीं कह रहा है, क्योंकि वहां ऐसा कुछ न था) तो यह *प्रभु भोज* खाने के लिये नहीं, क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहले *अपना भोज* खा लेता है, सो कोई तो भूखा रहता है, और कोई मतवाला हो जाता है (1 कुरि. 11:20-21, पर बल दिया गया है)।

यदि पौलुस आधुनिक कलीसियाओं में प्रभु भोज पर व्यवहार में लाए जानेवाली विधि के बारे में बोल रहा है तो इसका क्या अर्थ निकलता है? क्या आपने आधुनिक कलीसिया में कभी किसी को अपना भोज सबसे पहले लेने की समस्या के बारे में सुना है, और यह कि एक भूखा रह जाता है तथा दूसरा पीकर मतवाला हो जाता

है? इस तरह के शब्दों का केवल तब ही कोई अर्थ निकलेगा यदि प्रभु भोज को एक वास्तविक भोज के साथ जोड़ा जाए। पौलुस आगे कहता है :

क्या खाने-पीने के लिये तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिनके पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो? मैं तुम से क्या कहूं? क्या इस बात में तुम्हारी प्रशंसा करूं? मैं प्रशंसा नहीं करता (1 कुरि. 11:22)।

यदि यह सब वास्तविक भोज के संदर्भ में नहीं था तो वे लोग अपने पास कुछ न होने पर कैसे लज्जित होंगे? पौलुस इस सच्चाई की ओर संकेत दे रहा था कि कुछ कुरिन्थ के विश्वासी सबसे पहले पहुंच जाने पर किसी की प्रतीक्षा किये बिना अपना भोजन पहले ही खा लेते थे। जब कोई आता था जो शायद इतना दरिद्र होता था कि अपने साथ भोजन नहीं ला पाता था कि सामूहिक भोज में बांट सके, तो वह न केवल भूखा रह जाता था परन्तु भोजन न ला पाने के कारण वह शर्मिन्दा भी होता था।

इसके तत्काल बाद ही पौलुस ने प्रभु भोज, एक पवित्र विधि के बारे में बहुत कुछ लिखा जिसे उसने ''प्रभु से पाया था'' (1 कुरि. 11:23), और प्रथम प्रभु भोज में जो कुछ हुआ था वह उसका दोबारा वर्णन करता है (देखें 1 कुरि. 11:24-25)। इसके बाद उसने कुरिन्थियों को प्रभु भोज में गलत तरीके से भाग लेने के विरोध में चेतावनी दी, यह कहते हुए कि यदि वे स्वयं का न्याय न करें, तो वे इसको खाते और पीते हुए स्वयं पर निर्बलता, रोग और मृत्यु के न्याय को लाएंगे (देखें 1 कुरि. 11:26-32)।

तत्पश्चात् उसने परिणाम निकाला,

इसलिए हे मेरे भाइयो, जब तुम खाने के लिए इकट्ठे होते हो, तो एक दूसरे के लिये ठहरा करो, यदि कोई भूखा हो तो अपने घर में खा ले जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो (1 कुरि. 11:33-34)।

प्रासंगिक रूप में, प्रभु भोज के समय में किये जाने वाला अपराध दूसरे विश्वासियों के प्रति लापरवाह होने को दिखाता है। पौलुस ने उन्हें फिर से चेतावनी दी जो अपने भोजन को पहले से ही खा लेते थे जबकि उन्हें उसे एक दूसरे के साथ बांटना होता था, वे परमेश्वर द्वारा दण्डित (या अनुशासित) किये जाने के खतरे में थे। समाधान सरल था। यदि कोई इतना भूखा हो कि वह दूसरों की प्रतीक्षा न कर सके, तो उसे समूह में आने से पहले ही खाकर जाना चाहिए, और पहले आनेवालों को भोज में बाद में आनेवालों की प्रतीक्षा करनी चाहिए एक ऐसे भोजन के लिए जो कि प्रभु भोज था।

पूरे परिच्छेद को देखने पर यह स्पष्ट होता हुआ प्रतीत होता है कि पौलुस कह रहा था कि यदि यह *प्रभु* भोज था तो इसे पहले खा लिया जाए, इसे इस तरह से किया जाना चाहिए था कि यह *प्रभु* को प्रसन्न करने के योग्य हो, और उसी के साथ-साथ यह एक दूसरे के प्रेम और चिन्ता को भी प्रतिवर्तित करे।

किसी भी तरह से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि आरम्भिक कलीसिया घरों

में याजक वर्ग की स्थापना के बिना सामूहिक भोज के भाग के रूप में प्रभु भोज की विधि पर कार्य करती थी। हम ऐसा क्यों नहीं करते?

रोटी और दाखमधु
Bread and Wine

प्रभु भोज के तत्वों की प्रकृति कोई अति महत्वपूर्ण चीज़ नहीं है। मूल प्रभु भोज की नकल करने का प्रयास करने के लिए हमें रोटी में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री तथा उन अंगूरों के बारे में सही-सही जानना होगा जिनसे दाखमधु को बनाया जाता था। (पहली कुछ शताब्दियों के आत्मिक पिताओं ने कठोर रूप से कहा था कि दाखमधु में पानी को मिलाया जाना चाहिए, नहीं तो यूकारिस्ट का प्रयोग अनुचित रीति से होगा।)

रोटी और दाखमधु एक प्राचीन यहूदी भोज के प्रमुख घटक होते थे। यीशु ने दो चीज़ों को संपूर्ण महत्व दिया जो कि साधारण थीं, भोजन-जिसका प्रयोग व्यावहारिक रूप से प्रतिदिन प्रत्येक के द्वारा किया जाता था। क्या वह इतिहास में एक भिन्न संस्कृति से होकर गया था, हो सकता है कि प्रथम प्रभु भोज मक्खन और बकरी के दूध, या चावल के केक और अनानास के जूस से मिलकर बना हो। अत: किसी भी तरह का भोजन या पेय पदार्थ उसके शिष्यों के बीच सामूहिक भोज के समय में उसके बदन और लहू को चित्रित कर सकता है। आइये, इस पत्र को प्राप्त करने में सफलता पाते हुए व्यवस्था के आत्मा की अनदेखी न करें।

यह ज़रूरी नहीं है कि सामूहिक भोज को विधिवत् रूप से ही किया जाना चाहिए। जैसा हम पहले पढ़ चुके हैं कि आरम्भिक मसीही ''घर-घर रोटी तोड़ते हुए *आनन्द* और मन की सीघाई से भोजन किया करते थे'' (प्रेरित. 2:46, पर बल दिया गया है)। तथापि, यीशु के बलिदान को स्मरण करने और तत्वों के समाप्त हो जाने पर भोजन के इस भाग की गंभीरता निश्चय ही उपयुक्त है। 1 कुरिन्थियों 11:17-34 में पौलुस द्वारा कुरिन्थ के विश्वासियों को दिये गए चेतावनी के कुछ शब्द इस बात का संकेत देते हैं कि प्रभु भोज को खाने से पहले स्वयं की जांच कर लेना ज़रूरी है। एक दूसरे से प्रेम करने की मसीह की आज्ञा का उल्लंघन परमेश्वर के अनुशासन का एक निमंत्रण है। भोज से पहले किसी भी तरह के झगड़े और फूट का समाधान किया जाना चाहिए। प्रत्येक विश्वासी को स्वयं की जांच करते हुए अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए जो कि पौलुस के शब्दों के अनुसार 'स्वयं की जांच करना' होगा।

आत्मा ने स्वयं को देह के द्वारा व्यक्त किया
The Spirit Manifested Through the Body

सामूहिक भोज- आराधना, शिक्षण और आत्मिक दानों को बांटे जाने वाली सभा के पश्चात् या पहले हो सकता था। इसके स्वरूप को किसी भी व्यक्तिगत गृह कलीसिया

में निर्धारित किया जा सकता था और स्वरूप एक ही गृह कलीसिया के अलग-अलग इकट्ठे होने से भिन्न हो सकता था।

पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि आरम्भिक कलीसिया का एकत्रित होना आधुनिक संस्थागत कलीसियाई सर्विस से बिल्कुल भिन्न था। 1 कुरिन्थियों 11-14 हमें आरम्भिक मसीहियों के एकत्रित होने के समय की झलक को देता है, और इस पर विचार करने का कोई कारण नहीं है कि उसी स्वरूप को आज लागू नहीं किया जा सकता या फिर उसके अनुसार आज नहीं किया जाना चाहिए। पौलुस ने जो कुछ बताया उसके अनुसार यह भी स्पष्ट हो जाता है कि जो कुछ आरम्भिक कलीसिया के समूहों में हुआ था वह छोटे गृह समूहों में भी पूरा हो सकता है। पौलुस ने जो कुछ बताया उसका एक बड़ी सभा में होना संभव नहीं है।

मैं यह स्वीकार करनेवाला प्रथम हूंगा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों के प्रथम चार अध्यायों में जो कुछ लिखा मैं उसे नहीं समझता हूं। तथापि, यह संभावित प्रतीत होता है कि 1 कुरिन्थियों 11-14 में वर्णन किये जानेवाले समूह की प्रमुख विशेषता उनमें पवित्र आत्मा की उपस्थिति का होना और देह के सदस्यों द्वारा उसका व्यक्त होना था। उसने पूरी देह की उन्नति के लिए व्यक्तियों को दान दिये।

पौलुस नौ आत्मिक दानों की सूची देता है: भविष्यवाणी, अन्यभाषा, अन्यभाषा का अनुवाद, ज्ञान का वचन, बुद्धि का वचन, आत्माओं की परख, चंगाई के दान, विश्वास और चमत्कार के कार्य। वह यह नहीं कहता कि ये सभी दान एक ही सभा में व्यक्त होने चाहिए, बल्कि निश्चय ही यह 1 कुरिन्थियों 14:26 में आत्मा के व्यक्त होने को संक्षिप्त करता प्रतीत होता है :

> इसलिये हे भाइयो, क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है: सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए।

आइये साधारण प्रगटीकरण के पांचों पहलुओं पर विचार करें, और बाद के अध्याय में 1 कुरिन्थियों 12:8-20 में सूचीगत आत्मा के नौ दानों पर पूरी तरह से विचार करेंगे।

सूची में सबसे पहला भजन है। अन्य और दो कलीसियाओं को मसीही सभा में उनके स्थान पर रेखांकित करते हुए पौलुस द्वारा आत्मा-प्रदत्त भजनों का वर्णन किया गया है।

> और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन

> में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो (इफि. 5:18-19)।
>
> मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ (कुलु. 3:16)।

भजनों, स्तुतिगानों और आत्मिक गीतों के बीच का अन्तर अस्पष्ट है, लेकिन प्रमुख बात यह है कि सभी मसीह के वचनों पर आधारित व आत्मा द्वारा प्रेरित होने पर विश्वासियों द्वारा एक दूसरे को सिखाने व उपदेश देने के लिए गाए जाने चाहिए। निश्चय ही विश्वासियों द्वारा कलीसियाई इतिहास में गाए जाने वाले गीत इन्हीं वर्गों से होंगे। दुर्भाग्यवश, बहुत से आधुनिक गीतों में बाइबल की गहराई की कमी होने के कारण वे इस ओर संकेत देते हैं कि वे आत्मा-प्रदत्त नहीं हैं, और उनके उथले होने के कारण उनमें विश्वासियों को सिखाने व उपदेश देने की योग्यता नहीं होती। इसके अतिरिक्त, गृह कलीसियाओं में एकत्रित होने वाले विश्वासियों को यह अपेक्षा करनी चाहिए कि आत्मा न केवल मसीहियों को परिचित पुराने और नये गीतों को गाने को प्रेरित करेगा, बल्कि वह कुछ सदस्यों को कुछ विशेष गीत भी देगा जिनका प्रयोग सबकी उन्नति के लिए किया जा सके। अत: कलीसियाओं के लिए अपने स्वयं के आत्मा-प्रदत्त गीतों का होना कितना ज़रूरी है!

शिक्षा
Teaching

पौलुस की सूची में दूसरा स्थान शिक्षा का है। यह पुन: इस ओर संकेत करता है कि किसी को भी सभा में आत्मा प्रेरित शिक्षा को बांटना चाहिए। बेशक, प्रत्येक शिक्षा का न्याय इस आधार पर होगा कि क्या वह प्रेरितों की शिक्षा के अनुकूल है (जैसे हर कोई उसके प्रति समर्पित था: देखें प्रेरित. 2:42) और हमें आज भी वैसा ही करना चाहिए। लेकिन इस पर भी ध्यान दें कि नये नियम में यहां और वहां कहीं भी इस बात का संकेत नहीं मिलता कि एक ही व्यक्ति ने सभा पर प्रभुत्व करते हुए प्रत्येक सप्ताह संदेश दिया।

यरूशलेम के मन्दिर में जहां प्रेरित शिक्षा देते थे वहां बड़ी सभा होती थी। हम जानते हैं कि कलीसियाओं में प्राचीनों को शिक्षा देने का उत्तरदायित्व दिया गया था और यह भी कि कुछ लोगों को शिक्षा देने के लिए बुलाया गया है। पौलुस ने शिक्षा देने का कार्य सार्वजनिक रूप से और घर-घर जाकर किया (देखें प्रेरित. 20:20)। तथापि, विश्वासियों की छोटी सभाओं में पवित्र आत्मा प्राचीनों, प्रेरितों या शिक्षकों के अतिरिक्त दूसरों को भी शिक्षा देने के लिए प्रयोग कर सकता है।

शिक्षा के संबंध में यह प्रतीत होता है कि हमारे पास आरम्भिक कलीसिया की तुलना में अपनी सभाओं में जाने हेतु अपनी अलग बाइबल को ले जाने का अवसर उपलब्ध है। दूसरी ओर, बाइबल तक पहुंचने की हमारी सरलता ने परमेश्वर को अपने संपूर्ण मन से प्रेम करने और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करने के सिद्धान्त का मूल्यांकन करने में हमारी सहायता की है, हमसे उस जीवन को छीनते हुए जिससे परमेश्वर के वचन का अभिप्राय विदित कराने से था। हमारी सैद्धान्तिक रूप से मृत्यु हो गई है। अधिकांश छोटे समूहों के अध्ययन रविवार प्रात: संदेशों के समान असंबद्ध और नीरस होते हैं। गृह कलीसिया शिक्षा का अनुसरण करने का सबसे अच्छा तरीका यह है: यदि बड़े बच्चे अपने शयन कक्ष में नहीं छिप रहे हैं, तो संभव है कि व्यस्क छिप रहे होंगे। बच्चे सत्य के बड़े बैरोमीटर हैं।

प्रकाशन
Revelation

पौलुस की सूची में तीसरा 'प्रकाशन' है। इसका अभिप्राय उस किसी चीज़ से हो सकता है जिसे परमेश्वर द्वारा देह के किसी सदस्य पर प्रगट किया गया हो। उदाहरण के लिये, पौलुस विशिष्ट रूप से इस बारे में बताता है कि एक अविश्वासी को किस तरह से एक मसीही सभा में आना चाहिए और कैसे उसे अपने हृदय के भेद को गुप्त रखना चाहिए। जिसका परिणाम यह होगा कि वह ''मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और मान लेगा कि परमेश्वर सचमुच तुम्हारे बीच में है'' (1 कुरि. 14:24-25)।

यहां हम एक बार फिर से देखते हैं कि पवित्र आत्मा की वास्तविक उपस्थिति कलीसियाई सभाओं का एक अपेक्षित रूप था, और यह कि उसकी उपस्थिति के कारण अलौकिक चीज़ें घटेंगी। आरम्भिक मसीहियों ने यीशु की इस प्रतिज्ञा पर सच में विश्वास किया कि, ''जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं'' (मत्ती 18:20)। यदि यीशु स्वयं उनके बीच में था, तो चमत्कार अवश्य हो सकते थे। उन्होंने 'आत्मा में होकर परमेश्वर की आराधना की' (फिलि. 3:3)।

21. बेशक मुझे इस बारे में जानकारी है कि कुछ ऐसे हैं जो आत्मा की सभी अलौकिक अभिव्यक्तियों को प्रथम शताब्दी में होने वाली गतिविधि के रूप में देखते हैं, उनके अनुसार अब वह समाप्त हो चुका है। अत: अब हमारे पास उस चीज़ की खोज करने का कोई कारण नहीं है जिसका अनुभव आरंभिक कलीसिया ने पाया था, और अन्य भाषा में बोला अब वैद्य नहीं है। इस तरह विचार करने वाले लोगों के प्रति मुझे सहानुभूति है जो कि आधुनिक दिनों के सदुकियों के समान हैं। कई अवसरों पर जापानी वक्ताओं ने मुझे जापानी भाषा में परमेश्वर की स्तुति करते सुना है, जबकि मैंने कभी जापानी भाषा को सीखा भी नहीं, मैं जानता हूं कि आत्मा के ये वरदान समाप्त नहीं हुए हैं। मुझे इस बात की भी हैरानी होती है कि ये आधुनिक सदूकी पवित्र आत्मा की बुलाहट, दोष स्वीकृति और पापियों को नव जीवन देने हेतु, कार्यशील मानते हैं, लेकिन इन चमत्कारों के अतिरिक्त उसके अन्य कार्यों से इन्कार करते हैं। इस तरह की ''थियोलोजी मानव विश्वास और आनाज्ञाकारिता का उत्पादन है, जिसका समर्थन पवित्रशास्त्र नहीं करता जो कि वास्तव में मसीह के लक्ष्यों के विरुद्ध कार्य करता है। पौलुस ने 1कुरि. 14:37 में जो लिखा उसके अनुसार यह मसीह के प्रति प्रत्यक्ष अनाज्ञाकारिता है।

किसी भी मामले में, भविष्यवाणी, जिसके बारे में मैं कम से कम कहूंगा, उसमें लोगों के हृदयों का प्रकाशन पाया जाता है। लेकिन प्रकाशन दूसरी चीज़ों के बारे में या दूसरे तरीकों से दिया जा सकता है, जैसे स्वप्नों या दर्शनों के द्वारा (देखें प्रेरित. 2:17)।

अन्य भाषा और अनुवाद
Tongues and Interpretation

चौथा, पौलुस एक साथ आनेवाले दो दानों को सूचीगत करता है, अन्य भाषा और अन्य भाषा का अनुवाद। कुरिन्थ में, अन्य भाषा में बहुत अधिक बोला जाता था और उसका बुरी तरह से प्रयोग किया जाता था। प्रमुख रूप से उस समय में, जब कलीसियाई सभाओं में लोग अन्य भाषा में बोलते थे और उसका अनुवाद करने वाला वहां कोई नहीं होता था, अत: जो कुछ कहा गया होता था उसे कोई जान नहीं पाता था। हमें इस बात पर हैरानी हो सकती है कि कुरिन्थियों पर इसका दोष क्यों लगाया गया, जबकि कमी तो पवित्र आत्मा की प्रतीत होती है कि लोगों को अन्य भाषा में बोलने का वरदान देकर उन्हें उसका अनुवाद करने का वरदान नहीं दिया। आगे के अध्याय में मैं आपको इसका संतुष्टि देनेवाला जवाब दूंगा। किसी भी तरह से पौलुस ने अन्य भाषा में बोलना नहीं छोड़ा (जैसा बहुत सी संस्थागत कलीसियाएं करती हैं)। इसके विपरीत, उसने अन्य भाषा को वर्जित करने से निषेध कर दिया, और उसने इसे परमेश्वर की आज्ञा के रूप में घोषित किया (देखें 1 कुरि. 14:37-39)![21] यह एक ऐसा दान था जिसका उचित रूप से प्रयोग किये जाने पर यह देह को उन्नत करते हुए उनके बीच में परमेश्वर की अलौकिक उपस्थिति की पुष्टि कर सकता था। परमेश्वर लोगों के द्वारा उन्हें अपने सत्य और अपनी सत्य इच्छा को स्मरण कराते हुए बोल रहा था।

पौलुस ने अध्याय 14 में अन्य भाषा बोलने में अनुवाद न किये जाने पर भविष्यवाणी की सर्वोच्चता का पक्ष लिया है। वह कुरिन्थियों को भविष्यवाणी करने की इच्छा रखने को प्रेरित करता है और यह इस बात की ओर संकेत देता है कि आत्मा के दान उनमें व्यक्त होते हैं जो इनकी इच्छा करते हैं। पौलुस ने थिस्सलुनीके के विश्वासियों से कहा "आत्मा को न बुझाओ; भविष्यवाणियों को तुच्छ न जानो" (1 थिस्स. 5:19-20)। यह इस ओर संकेत देता है कि विश्वासी भविष्यवाणी के दान के प्रति गलत रवैया प्रगट करते हुए आत्मा को 'बुझा' सकते हैं। इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है कि भविष्यवाणी का दान आज अधिकांश विश्वासियों में इतना कम क्यों व्यक्त होता है।

कैसे आरम्भ करें
How to Start

गृह कलीसियाओं का जन्म पवित्र आत्मा द्वारा एक गृह कलीसिया रोपक या एक प्राचीन/पास्टर/निरीक्षक की सेवकाई द्वारा हुआ है जिसे परमेश्वर द्वारा गृह कलीसिया के लिए एक दर्शन दिया गया है। स्मरण रखें कि एक प्राचीन/पास्टर/निरीक्षक वह व्यक्ति हो सकता है जिसका उल्लेख संस्थागत कलीसिया एक परिपक्व अयाजक व्यक्ति के रूप में करती है। गृह कलीसिया रोपक को औपचारिक सेवकाई शिक्षा की कोई ज़रूरत नहीं होती।

संस्थापक को एक बार पवित्र आत्मा द्वारा एक गृह कलीसिया का दर्शन दिये जाने के पश्चात् उसे दूसरों के खातिर परमेश्वर को ढूंढने की ज़रूरत होती है जिसमें दूसरे भी उससे जुड़ जाएं। प्रभु उसे उसी दर्शन के समान लोगों के साथ लाएगा, उसके नेतृत्व की पुष्टि करते हुए। या फिर उसकी अगुवाई ग्रहणशील अविश्वासियों की ओर की जा सकती है जिनका वह मसीह की ओर नेतृत्व कर उन्हें गृह कलीसिया के लिए शिष्य बना सकता है।

वे लोग जो अभी एक गृह कलीसिया का आरम्भ करने जा रहे हैं उन्हें यह स्वीकार करना चाहिए कि सदस्यों को एक दूसरे के साथ सुविधा अनुभव करने और आत्मा के साथ संबन्धित और प्रवाहित होने में कुछ समय लगेगा। पूरे मार्ग में परीक्षण और गलतियां होंगी। प्रत्येक सदस्य की साझेदारी, बाइबल आधारित सेवक अगुवाई, प्राचीनों को तैयार करना, पवित्र आत्मा का नेतृत्व और दान, एक सामूहिक भोज, और एक आत्मिक वातावरण की धारणा उन सबके लिए अनजाने हैं जो केवल संस्थागत कलीसियाई सर्विस से ही परिचित हैं। अत:, एक नई गृह कलीसिया के जन्म लेने पर अनुग्रह और धैर्य की कार्यवाही बुद्धिमत्तापूर्ण है। आरम्भिक स्वरूप-एक गृह बाइबल अध्ययन, आराधना का नेतृत्व एक व्यक्ति द्वारा किये जाने, एक तैयार की गई शिक्षा को बांटने के रूप में हो सकता है और उसके बाद समापन-सामूहिक प्रार्थना, सहभागिता और भोज के साथ किया जा सकता है। तथापि, समूह को चाहिए वे समूह द्वारा गृह कलीसियाओं के लिए अध्ययन किये गए बाइबल आधारित स्वरूप हेतु सदस्यों को परमेश्वर के लिए कुछ अच्छा करने का प्रयास करने को प्रोत्साहित करें। इसके बाद यात्रा का आनन्द लें!

गृह कलीसिया सभाओं को एक सप्ताह के बाद दूसरे सप्ताह अन्य सदस्यों के घरों में वितरित किया जा सकता है, या फिर एक ही प्रत्येक सप्ताह के लिए अपने घर को खोल सकता है। कुछ गृह कलीसियाएं औपचारिक रूप से बाह्य स्थानों में मौसम अच्छा होने पर की जाती हैं। सभा का समय और स्थान रविवार प्रात: का नहीं होता, परन्तु वह समय जो सभी सदस्यों के लिए सही हो। अन्त में, छोटे से आरम्भ करना अधिक अच्छा है, जिसमें बारह से अधिक लोग न हों।

संस्था से गृह कलीसिया में स्थानान्तरण कैसे करें

How to Transition from Institution to House Church

संभव है कि इसे पढ़ने वाले अधिकांश पास्टर संस्थागत कलीसियाओं के ढांचे में कार्य कर रहे हैं, और प्रिय पाठक, आप भी शायद उनमें से एक हों। यदि मैं आपमें पाई जाने वाली उस तंत्रिका का स्पर्श करूं जो उस तरह की कलीसिया की अभिलाषा करता है जिसके बारे में मैं बता रहा हूं, आप निश्चय ही हैरानी में होंगे कि आपको स्थानान्तरण कैसे करना है। मैं आपको अपना स्वयं का समय लेने के लिए प्रोत्साहित करता हूं। बाइबल आधारित सत्य को सिखाने के द्वारा तथा यीशु की आज्ञाओं का पालन करने वाले शिष्यों को बनाने के लिए आप अपने वर्तमान ढांचे में जो कुछ कर सकते हैं उसे करने के द्वारा ही आरम्भ करें। सच्चे शिष्य एक बाइबल आधारित कलीसियाई ढांचे को अत्यधिक स्थानान्तरित करना चाहते हैं, जबकि वे इसे समझ लेते हैं। बकरियां और धर्मी लोग इस तरह के किसी भी परिवर्तन या स्थानान्तरण का विरोध करते हैं।

दूसरा, पवित्रशास्त्र इस विषय पर जो कुछ कहता है उसका अध्ययन करें और अपनी मण्डली को गृह कलीसिया बनावट और उनकी आशीषों के बारे में सिखाएं। आप परिपक्व विश्वासियों के निरीक्षण में घरों में साप्ताहिक सेल सभाओं का आरम्भ करने को अन्ततः अपने सप्ताह के बीच की या रविवार सांध्यकालीन कलीसियाई सर्विस को रद्द कर सकते हैं। प्रत्येक को इसमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करें। गृह कलीसियाओं के बाइबल आधारित नमूने के स्वरूप का अनुसरण करने को जितना अधिक संभव हो सके उन सभाओं के नमूने में वृद्धि करें। तत्पश्चात्, लोगों को अपने छोटे समूह की आशीषों का आनन्द उठाने का समय दें।

एक बार प्रत्येक के गृह सभाओं का आनन्द लेने पर, आप यह घोषणा कर सकते हैं कि अगले माह का एक निर्धारित रविवार ''प्रातःकालीन कलीसियाई रविवार'' होने वाला है। उस दिन कलीसियाई इमारत बन्द रहेगी और हर कोई घरों में मिलने के लिए आरम्भिक कलीसिया के समान जाएगा; एक दूसरे के साथ पूर्ण भोज, प्रभु भोज, सहभागिता, प्रार्थना, आराधना, शिक्षा और आत्मिक दानों को बांटे जाने का आनन्द लेते हुए। इसके सफल होने पर, आप इस तरह की सभाओं का आरम्भ प्रत्येक माह के एक रविवार में कर सकते हैं, तत्पश्चात् दो रविवार और उसके बाद तीन रविवार। अन्ततः, आप प्रत्येक समूह को एक स्वतन्त्र गृह कलीसिया के रूप में उन्मुक्त कर सकते हैं, बढ़ने और गुणन करने को स्वतन्त्र होने के लिए, और शायद प्रत्येक दो माह में एक बार बड़ी सभाओं का भी आयोजन किया जाए।

परिवर्तन की जिस प्रक्रिया के बारे में मैंने बताया उसमें एक या दो वर्षों का समय लग सकता है।

या, यदि आप अधिक सावधानीपूर्वक जाना चाहते हैं, तो आप अपने कुछ मनपसंद सदस्यों के साथ एक गृह सभा में इसका स्वयं नेतृत्व करते हुए आरम्भ कर सकते हैं। (पुनः, गृह कलीसियाओं को रविवार प्रातः मिलना नहीं है।) इसे एक परीक्षण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जो कि सभी के लिए निश्चय ही एक सीखने वाला अनुभव होगा।

इसके सफल होने पर, एक निरीक्षक अथवा अध्यक्ष को नियुक्त करते हुए समूह को एक स्वतंत्र कलीसिया के रूप में उन्मुक्त करें जो महीने में एक बार संस्थागत रविवार सभा में शामिल होगा। इस तरह से नई कलीसिया मुख्य कलीसिया का एक भाग रहेगी, और संस्थागत मण्डली द्वारा इसे नकारात्मक दृष्टिकोण से देखा नहीं जाएगा। इससे दूसरों को संस्थागत कलीसिया का एक भाग होते हुए दूसरी गृह कलीसिया का भाग बनने की प्रेरणा मिलेगी।

पहले समूह के बढ़ने पर, प्रार्थनापूर्वक इसे विभाजित करें जिससे दोनों समूहों में अच्छे अगुवे होने के साथ-साथ उनके सदस्यों के पास पर्याप्त दान भी हों। दोनों ही समूह एक दूसरे की सहमति पर किसी बड़े उत्सव में एक दूसरे से मिल सकते हैं, संभवतः महीने में एक बार या तीन माह में एक बार।

आपने चाहे जो भी मार्ग लिया हो, निराशाओं के बावजूद अपनी दृष्टि को लक्ष्य पर रखें, जो संभवतः कम ही होंगी। गृह कलीसियाएं लोगों से मिलकर बनती हैं, और लोग ही समस्या का कारण होते हैं। हिम्मत न हारें।

यह कठिन होगा कि आपकी पूरी संस्थागत कलीसिया में इस तरह के परिवर्तन हों, इसलिए आपको यह निर्धारित करना होगा कि आप व्यक्तिगत रूप में एक गृह कलीसिया या गृह कलीसियाओं के समूह के प्रति पूरी तरह से कैसे समर्पित होंगे, संस्था को पीछे छोड़ते हुए। वह दिन आपके लिए महत्वपूर्ण होगा!

आदर्श कलीसिया

The Ideal Church

क्या एक गृह कलीसिया का पास्टर परमेश्वर की दृष्टि में एक बड़ी इमारत वाली विशाल कलीसिया के पास्टर से वास्तव में अधिक सफल हो सकता है, जिसमें प्रति रविवार हज़ारों की संख्या में लोग आते हों। हाँ, यदि वह यीशु के नमूने का अनुसरण करते हुए आज्ञाकारी शिष्यों का गुणन करते हुए शिष्य बना रहा हो, उसका विरोध सप्ताह में एक बार उन आत्मिक बकरियों के द्वारा किया जाएगा जो एक मनोरंजक संदेश को सुनना पसंद करती हैं।

एक पास्टर जो गृह कलीसिया नमूने के अनुसार चलने का निर्णय लेता है, उसकी कभी भी एक बड़ी मण्डली नहीं होगी। तथापि, संभव है कि दौड़ में, वह अच्छे

फलों को प्राप्त करे जबकि उसके शिष्य अन्यों को शिष्य बनाने वाले हों। 40 या 50 लोगों की छोटी मण्डली वाले पास्टर जो और भी संख्या बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं उन्हें अपनी विचारधारा में सामंजस्य स्थापित करने की ज़रूरत है। हो सकता है कि उनकी कलीसियाएं पहले से ही बहुत बड़ी हों। शायद उन्हें एक बड़ी इमारत के लिए प्रार्थना करना बन्द करके इस बारे में प्रार्थना करना आरम्भ करना चाहिए कि दो नई गृह कलीसियाओं में नेतृत्व का कार्य किसे दिया जाना चाहिए। (कृपया, ऐसा होने पर, अपनी नई डिनोमिनेशन को एक नया नाम न दें और न ही स्वयं को 'बिशप' का शीर्षक दें।)

हमें इस विचारधारा को नष्ट करने की ज़रूरत है कि कलीसिया के मामले में बड़ी चीज़ अच्छी होती है। यदि हमें केवल बाइबल आधार पर ही न्याय करना होता तो शिष्य न बनाए गए सैकड़ों दर्शकों की एकमात्र मण्डली जो एक विशेष इमारत में एकत्रित होती है उसे बिलकुल अजनबी जाना जाएगा। यदि मूल प्रेरितों में से कोई भी आधुनिक संस्थागत कलीसियाओं में आ जाए तो वह अपने सिर को खुजलाने लगेगा!

एक अन्तिम विरोध
A Final Objection

प्राय: ऐसा कहा जाता है कि पश्चिमी संसार जहां मसीहियत पहले से ही संस्कृति का भाग बन गई है, वहां के लोग कभी भी घरों में होने वाली कलीसियाई सभाओं को स्वीकार नहीं करेंगे। इसी कारण यह तर्क दिया जाता है कि हमें संस्थागत नमूने के अनुसार ही चलना चाहिए।

सर्वप्रथम, यह सत्य होता प्रमाणित नहीं हो रहा है कि गृह कलीसिया आन्दोलन पश्चिमी संसार में तेज़ गति से बढ़ रहा है।

दूसरा, लोग घरों में पार्टियों, भोज, सहभागिता, बाइबल अध्ययन और गृह सेल समूहों के लिए खुशी के साथ इकट्ठे होते हैं। घर में कलीसिया को ग्रहण करने का विचार करने के लिए विचारधारा में बहुत थोड़ा ही सामंजस्य करने की ज़रूरत होती है।

तीसरा, यह सत्य है कि धार्मिक लोग, ''आत्मिक बकरियां'' गृह कलीसिया की धारणा को कभी भी ग्रहण नहीं करेंगे। वे ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे जिससे वे अपने पड़ोसियों के लिए कुछ अजीब लगे। लेकिन यीशु मसीह के सच्चे शिष्य बाइबल के आधार को एक बार समझ लेने के बाद निश्चय ही गृह कलीसियाओं की धारणा को स्वीकार करेंगे। वे जल्द ही जान जाते हैं कि शिष्यता के लिए कलीसियाई इमारत

22. पौल हट्टावे, *बैक टु जरूसलेम* (कार्लिसल, 2003)

की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि आप एक बड़ी कलीसिया का निर्माण ''काठ, घास और फूस'' से करना चाहते हैं (देखें 1 कुरि. 3:12), तो आपको एक इमारत की ज़रूरत होगी, लेकिन यह सभी अन्त में जल जाएगा। परन्तु यदि आप शिष्यों और शिष्य-निर्माताओं का गुणन करना चाहते हैं, ''सोने, चांदी और बहुमूल्य पत्थर'' से यीशु मसीह की कलीसिया का निर्माण करते हुए, तब आपको इमारतों पर धन और शक्ति खर्च करने की ज़रूरत नहीं है।

यह रोचक है कि आज संसार का सबसे बड़ा देशी प्रचारीय आन्दोलन ''यरूशलेम की ओर वापसी'' चीनी गृह कलीसियाओं का हैं, जिसने 10/40 खिड़की तक प्रचार कार्य करने की विशिष्ट रणनीति को ग्रहण किया गया है। उनका कहना है, ''हमारी कहीं भी एक भी कलीसियाई इमारत का निर्माण करने की चाह नहीं है। इससे सुसमाचार तेज़ी से फैलता है और हमें सुसमाचार सेवकाई में हमारे सभी स्रोतों तक पहुंचने के योग्य करता है।''[22] निश्चय अनुसरण करने के लिए यह एक बाइबल पर आधारित और बुद्धिमतापूर्ण उदाहरण है!